thearyasamaj.org

ओ३म्-सुप्रभा

वैदिक सभ्यता-संस्कृति तथा राष्ट्रीय एकता की पोषक पत्रिका

ओ३म् क्रतो स्मर ।

वर्ष-8, अंक-2 | अक्तूबर 2014 | कार्तिक

सृष्टि संवत् 1960853115 | विक्रमी संवत् 2071 | दयानन्दाब्द 191

वयं स्याम पतयो रयीणाम् ।

हम धन ऐश्वर्यों के स्वामी बनें ।

दी.पा व ली

मंगलमय हो !

सम्पादक

मूलचन्द गुप्त

ओम् प्रतिष्ठान, कुसुमालय, बी-1/27, रघुनगर, पंखा रोड, नई दिल्ली-110045

thearyasamaj.org

ओ३म्

ओ३म्-सुप्रभा

वैदिक सभ्यता-संस्कृति तथा राष्ट्रीय एकता की पोषक पत्रिका

• *परामर्श*

डॉ० धर्मपाल आर्य
(पूर्व कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार)
ए/एच-16, शालीमार बाग,
दिल्ली-110088
दूरभाष-011-27472014
011-27471776

• *सम्पादक*

मूलचन्द गुप्त
(पूर्व प्रधान आर्यसमाज दीवानहाल दिल्ली)

• *प्रकाशक*

मूलचन्द गुप्त,
अध्यक्ष, **ओम्-प्रतिष्ठान**
कुसुमालय, बी-1/27, रघुनगर,
पंखा रोड, नई दिल्ली-110045
दूरभाष-9650886070
011-25394083

ई-मेल-Ompratisthan@gmail.com

ओ३म्-सुप्रभा में प्रकाशित लेखों के सभी विचारों से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। वे विचार लेखक के अपने हैं !

प्रकाशक-मुद्रक-स्वामी-मूलचन्द गुप्त द्वारा सम्पादित, तथा वैदिक प्रेस, 995/51, गली नं० 17, कैलाशनगर, दिल्ली-31 (फोन-22081646) से मुद्रित कराकर, ओम् प्रतिष्ठान, कुसुमालय, बी-1/27, रघुनगर, पंखा रोड, नई दिल्ली- 45, से प्रकाशित किया। न्यायक्षेत्र-दिल्ली

उद्देश्य

✧ वैदिक सभ्यता, संस्कृति तथा राष्ट्रीय एकता का पोषण करना, वैदिक विचार-धारा के अनुसार मानव-निर्माण करना, समरस और समेकित समाज का संगठन करना, विश्व भर में सुख और शान्ति की स्थापना करने का प्रयास करना **ओम्-प्रतिष्ठान** का मुख्य उद्देश्य है।

✧ इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए समय समय पर विभिन्न बहुआयामी गतिविधियों का संचालन किया जाएगा।

✧ रचनात्मक और प्रेरक साहित्य का सृजन, प्रकाशन और प्रसारण का, इन गति-विधियों में प्रमुख स्थान होगा।

✧ इस पत्रिका में समय-समय पर आध्यात्मिक, सामाजिक, राजनैतिक, ऐतिहासिक, आर्थिक, नैतिक, वैश्विक चेतना जागृत करने से सम्बन्धित विषयों पर मौलिक लेख तथा समाचार प्रकाशित किए जायेंगे।

✧ **ओ३म्** परमपिता परमात्मा का निज नाम है। परमात्मा इस सृष्टि का नियन्ता है। सृष्टि से सम्बन्धित सभी विषयों का इसमें समावेश किया जाएगा।

✧ **ओ३म्-सुप्रभा** का प्रकाशन पूर्णतया निजी स्तर पर किया जा रहा है। उपर्युक्त उद्देश्यों की पूर्ति हेतु प्रति मास देश-विदेश के आर्य विद्वानों, लेखकों, उपदेशकों, कार्यकर्ताओं, प्रकाशकों एवं संस्थाओं को ओ३म्-सुप्रभा **निःशुल्क** भेजी जा रही है।

✧ लघु-पत्रिका के कारण, प्रकाशनार्थ लेख न भेजें।

✧ सुधी पाठकों से निवेदन है कि वे अपने सुझाव भेजकर कृतार्थ करते रहें।

thearyasamaj.org

ओ३म्-सुप्रभा

वैदिक सभ्यता-संस्कृति तथा राष्ट्रीय एकता की पोषक पत्रिका

रचना, स्थिति और प्रलय, कर्मों का फल जिस का विधान है ।
ओ३म् सुप्रभा ज्ञान अनुपम, सुरभित जिस से जन कुसुम प्राण है ।।

वर्ष–8, अंक–2 | अक्तूबर 2014 | कार्तिक
सृष्टि संवत् 1960853115 | विक्रमी संवत् 2071 | दयानन्दाब्द 191

ओ३म्–महिमा

अहं यज्ञः मा विलोप्सीय इति

—महात्मा नारायण स्वामी

तञ्चेदेतस्मिन्वयसि किञ्चिदुपतपेत् स ब्रूयात् प्राणा रुद्रा इदं मे माध्यन्दिनꣳ सवनं तृतीय सवनमनुसन्तनुतेति माऽहं प्राणानं ꣳ रुद्राणां मध्ये यज्ञो विलोप्सीयेत्युद्धैव तत एत्यगदो ह भवति ॥

अथ यान्यष्टाचत्वारिंशद्वर्शाणि तत्तृतीयसवनमष्टा चत्वारि ꣳ शदक्षरा जगती जागतं तृतीयसवनं सवनं तदस्यादित्या अन्वायत्ताः प्राणा वावाऽदित्या एते हीद् सर्वमाददते ॥

तञ्चेदेतस्मिन्वयसि किञ्चिदुपतपेत्स ब्रूयात् प्राणा आदित्या इदं मे तृतीयवनमायुरनुसन्तनुतेति माऽहंप्राणानामादित्यानां मध्ये यज्ञोविलोप्सीयेत्युद्धै वतत एत्यगदोहवैभवति ॥

एतद्ध स्म वै तद्विद्वानाह महीदास ऐतरेयः स किं एतदुपतपसि योऽहमनेन न प्रेष्यामती स ह षोडशं वर्षशतमजीवत्प्र ह षोडशं वर्षशतजीवति य एवंवेद ॥ छान्दोग्य उपनिषद् 3.16.4-7

अर्थ–(एतस्मिन्, वयसि, तम्, चेद्, किञ्चित, उपतपेत्) इस (44 वर्ष वाले ब्रह्मचर्य की) आयु में उस (ब्रह्मचारी) को यदि (कोई) कुछ भी सतावे । अर्थात् ब्रह्मचर्य में बाधा डाले तो (सः, ब्रूयत्, प्राणाः, रुद्राः इदं, मे, माध्यन्दिनं, सवनम्) वह (उनसे) कहे हे प्राणप्रिय बन्धुओ और रुद्रो ! यह यह मेरा माध्यन्दिन सवन है (आप लोग मेरे लिये) (तृतीय सवनं, संतुनुत, इति) तृतीय सवन (अर्थात् 48 वर्ष ब्रह्मचर्य) को विस्तृत करें ऐसा यत्न करें कि

thearyasamaj.org

(प्राणानं, रुद्राणां, मध्ये) आप प्राण प्रिये बन्धुओं और रुद्रों के मध्य में (अहं, यज्ञः, मा, विलोप्सीय, इति) मैं, जो यज्ञ हूं, लुप्त न हो जाऊं (तत्, ह उद एति) इस (विनय) से वह (ब्रह्मचारी) उदित होता है । (अगदः, हः, भवति) रोग (चिन्ता) रहित होता है ॥

(अथ, यानि, अष्टाचत्वारिंशद्वर्षाणि, तत्, तृतीय, सवनम्) इसे बाद जो 48 वर्ष (चतुर्थ ब्रह्मचर्य के) हैं वह तृतीय, सवन है । (अष्टाचत्वारिंशद, अक्षरा, जगती, जागतं तृतीय सवनम्) 48 अक्षरों का जगती छन्द होता है (इसलिये) जगती तृतीय सवन है (अस्य, तत्, आदित्याः अन्वायत्ताः) इस (यज्ञ, रूप, यज्ञ) के उस तृतीय सवन से आदित्य सम्बन्धित है । (प्राणाः, वाव आदित्या) प्राण ही आदित्य है (हिं, एते, इदं, सर्वं, आददते) क्योंकि ये (प्राण ही) इस सबको ग्रहण करते हैं ।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

ओ३म्-महिमा–

ओ३म् जपो ! ओ३म् जपो !!

स्व० ब्रह्मचारी जगन्नाथ "पथिक"

श्वासों की माला से साधो, ओ३म् जपो ! ओ३म् भजो !
भाव इसी का हृदय धरो ! ध्यान इसी का सदा करो !
दुर्लभ मानव-काया पाकर, एक श्वास भी व्यर्थ न खो ॥१॥
सिद्धमन्त्र यह दिया वेद ने, परखा सब ऋषि-मुनियों ने ।
पाया सच्चा परखैयों ने, यह पारस मन में बांध धरो ॥२॥
मानव जीवन मोती सम है, मिलना इसका नहीं सुगम है ।
विषय ताप से इसे जलाकर, इसकी अनुपम आब न खो ॥३॥
गुंजाफल को लाल समझ कर, अबुध भील ही हैं चुनते ।
मानव हो तुम बुद्धिमान् हो, कुछ तो मन में चेत करो ॥४॥
बैठे-चलते-सोते-जगते, धर्म-कर्म सब ही कुछ करते ।
आठों यम इसी मस्ती में, तुम अलख जगाते चले-चलो ॥५॥
बाधाएं पथ की मिट जातीं, अनुपम-रस से जीवन भर जाता ।
पथिक ! तू क्षण भी व्यर्थ न खो, बस लीन इसी में सदा रहो ॥६॥
है जीवन मुक्त वही कहलाता, अहं त्याग जो द्रष्टा बन जाता ।
रुचता नहीं संसार जिसे यह, पथिक-सम इसे पार कर जाता ॥७॥

["अनासक्ति-योग-मोक्ष की पगदण्डी" से साभार]

thearyasamaj.org

सम्पादकीय

ओ३म् सुप्रभा का अक्टूबर 2014 का अंक सुधी पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करते हुए हमें हार्दिक प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है। हम उन वैदिक विद्वानों के प्रति ससम्मान श्रद्धावनत है जिन्होंने आर्यसमाज की गतिविधियों को सम्यक्-रूपेण आगे बढ़ाया तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती के सिद्धान्तों एवं मन्तव्यों का वाणी और लेखनी से प्रचार-प्रसार किया। हम उन कर्मठ कार्यकर्त्ताओं एवं आर्य नेताओं को भी स्मरण करते हैं जिन्होंने सामाजिक समरसता के लिए तथा सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध अनेक आन्दोलन चलाए।

इस मास में विजया दशमी का पर्व है तथा दीपावली का भी। वास्तव में वर्षा ऋतु के साथ-साथ वेदारम्भ का कार्य प्रारम्भ हो जाता है। सभी आर्य भाई बहन वेदों का अध्ययन मनन एवं श्रवण करते हैं। वैदिक विद्वानों की वेद कथाएं आर्य समाजों में तथा अन्य स्थानों पर आयोजित की जाती हैं। विजया दशमी के अवसर पर हम मर्यादा पुरुषोत्तम राम का स्मरण करते हैं तथा प्रण करते हैं कि बुराईयों को हम छोड़ देंगे तथा सत्य के मार्ग पर चलेंगे। हम परम पिता परमात्मा से भी प्रार्थना करते हैं कि वह हमें बुराईयों को छोड़ने तथा अच्छाइयों को अपनाने के लिए प्रेरणा दें। अनेक वेद मन्त्रों में इस प्रकार की प्रार्थना की गई है। विजयादशमी का पर्व असत्य पर सत्य की विजय है, अज्ञान पर ज्ञान की विजय है, बुराइयों के अन्धकार पर अच्छाइयों के प्रकाश की विजय है। इसी प्रकार दीपावली का पर्व भी है। यह हर्षोल्लास का पर्व है। यह दीपोत्सव है। इसी दिन महर्षि दयानन्द सरस्वती का निर्वाण दिवस भी है। हम महर्षि दयानन्द के कार्यों का स्मरण करते हैं तथा प्रेरणा लेते हैं कि हम उनके सिद्धान्तों का प्रचार प्रसार करेंगे। महर्षि दयानन्द सरस्वती बहुमुखी प्रतिभा के व्यक्ति थे उन्होंने हमें स्वतंत्रता का मंत्र दिया। 1857 की स्वतंत्रता क्रान्ति को कुचल दिया गया। चारों ओर निराशा और किंकर्तव्य विमूढ़ता थी। महारानी विक्टोरिया की ओर से एक विज्ञप्ति बंटवाई गई थी कि अब भारत में पक्षपात रहित, न्याय युक्त तथा माता-पिता के समान दयापूर्ण शासन होगा। उस समय महर्षि दयानन्द ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में लिखा था– **'कोई कितना भी करे परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मत मतान्तर के आग्रह रहित अपने और पराये के पक्षपात शून्य प्रजा पर माता पिता के समान कृपा, न्याय, और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी सुखदायी नहीं है।'** ये पंक्तियां ऋषिवर की पराधीनता और

thearyasamaj.org

भारत दुर्दशा पर टीस है । यह उनके अगाध स्वदेश प्रेम की परिचायक है । उनका हृदय वस्तुतः क्रन्दन कर रहा है । महर्षि दयानन्द ने स्वराजय की स्थापना पर बल दिया । उन्होंने देशवासियों के हृदय में स्वाभिमान की ज्योति जलाई । वे स्वराज्य की भावना के प्रणेता थे । उन्होंने कहा था–मेरी आंखे उस दिन को देखने के लिए तरसती है, जब कश्मीर से कन्याकुमारी तक तथा अटक से कटक तक आर्यों का एकछत्र राज्य स्थापित होगा । उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए 11 नवम्बर 1954 को लौह-पुरुष सरदार पटेल ने कहा था–"स्वामी दयानन्द का सबसे बड़ा योगदान यह था कि उन्होंने देश को किंकर्तव्य विमूढ़ता के गहरे गड्ढे में गिर जाने से बचाया । उन्होंने भारत की स्वाधीनता की वास्तविक नींव डाली थी ।"

इसी मास हम महात्मा गांधी, लालबहादुर शास्त्री आदि सरदार पटेल, श्याम जी कृष्ण वर्मा को भी स्मरण करते हैं । आदिकवि वाल्मीकि तथा गुरुवर विरजानन्द सरस्वती का जन्म दिवस भी इसी मास में है । हमारा कर्तव्य है कि हम इन पुण्य आत्माओं को स्मरण करें तथा उनसे सुपथ पर चलने की प्रेरणा लें ।

–सम्पादक

(पृष्ठ 4 का शेष)

(एतस्मिन्, वयसि, तम्, वेद, किञ्चित, उपतपेत्) इस (48 वर्ष वाले ब्रह्मचर्य की) आयु में उस ब्रह्मचारी को यदि (कोई) कुछ भी सतावे (अर्थात् ब्रह्मचर्य में बाधा डाले) तो (सः, ब्रूयत्, प्राणा आदित्या, इदं, मे, तृतीय सवनम्) वह (उनसे) कहे हे प्राणो ! आदित्यो ! यह मेरा तीसरा सवन है । (आप लोग यत्न करें) आयुः (अनुसंतनुत इति) कि मेरी आयु वृद्धि हो (जिससे) (प्राणानां, आदित्यानां, मध्ये, अहं, यज्ञ, मा, विलोप्सीय, इति) आप प्राणों और आदित्यों के मध्य में, जो यज्ञ हूं, विलुप्त न हो जाऊं । (ततः, ह, उद, एति) इस (विनय) से वह उदित होता है (अगदः, ह, एव भवति) निश्चय नीरोग होता है ।

(ह महीदास, ऐतरेयः, तत्, विद्वान्, आह, स्म) प्रसिद्ध है कि महीदास ऐतरेय (इतरा के पुत्र) उस रस (विज्ञान) को जानते हुए कहा करते थे कि (सः, किं, एतत, अतपसि,) वह (ब्रह्मचर्य में बाधक जान) क्यों इस प्रकार तपाता दुःख देता है (यः, अहं, अनेन, न, प्रेष्यामि) जो मैं इस (तेरे उपताप) से नहीं मरूंगा (सः, षोडशं, वर्षशतं, अजीवत) प्रसिद्ध है कि वह 116 वर्ष जिये (यः, एवं, वेद, षोडशं, वर्षशतं, प्र, जीवति, ह) जो (कोई इस विज्ञान को) इस प्रकार जानता है निश्चय 116 वर्ष जीता है । ●

thearyasamaj.org

महर्षि को पुकार

—डॉ० हर्षवर्धन शर्मा

राष्ट्र एकता सिसकी जब जब,
मानवता अकुलाई,
दूर हुआ भाई भाई से,
संस्कृति बिसराई,

तब तब तुमने जन्म लिया और,
भारत का सन्ताप हरा,
सोई मानवता झकझोरी,
धन्य करी यह पुण्यधरा,

आज पुनः विघटन के बादल,
मेरे भारत पर छाए हैं,
राष्ट्र एकता के रक्षक ही,
अपना धर्म भुलाए हैं,

पुनः आलोकित करो 'महर्षि'
यह धरती और आकाश,
लिए हाथ में "ओ३म्" पताका,
और 'सत्यार्थ प्रकाश'।

'शिवम्' 1966/1 बेरीबाग,
सहारनपुर (उ० प्र०)

अप्रस्वती मम धीरस्तु।

मेरी बुद्धि कर्मवती हो। केवल सोचती न हो करती भी हो।

thearyasamaj.org

ऋषि-निर्वाण दिवस पर विशेष—

बहुमुखी क्रान्ति के प्रणेता : महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

भारतवर्ष के इतिहास में उन्नीसवीं शताब्दी को पुनर्जागरण काल माना गया है । इस युग के महापुरुषों ने अपने उदात्त व्यक्तित्व, उत्कृष्ट विचारधारा तथा प्रभावपूर्ण क्रिया कलापों द्वारा जनमानस को नया मार्ग दिखाया । राजा राममोहन राय, रामकृष्ण परमहंस, महर्षि दयानन्द सरस्वती और स्वामी विवेकानन्द के नाम इसी श्रृंखला में लिये जाते हैं । इन महापुरुषों ने अपने व्यक्तित्व और विचार-सम्पदा से मानव जाति का पथ-प्रदर्शन किया । महर्षि दयानन्द की गणना ऐसे ही शलाका पुरुषों में की जाती है । उनका व्यक्तित्व, नेतृत्व अपनी क्रान्तिकारी आभा के फलस्वरूप अपना विशिष्ट स्थान रखता है । दयानन्द का जन्म उस समय हुआ, जब भारत पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था । उस समय पतन और पराजय की दुर्भाग्यपूर्ण वेला में सभी किंकर्तव्य-विमूढ़ थे। राजा-महाराजा भोग विलास में मस्त थे । पाखण्ड और अन्धविश्वासों का जाल सर्वत्र फैला हुआ था । धर्म के नाम पर भोली-भाली जनता को ठगा जा रहा था । तन्त्र-मन्त्र, टोना-टोटका, भूत-प्रेत, डाकिनी-पिशाचिनी का सर्वत्र अन्धकारपूर्ण साम्राज्य था । ऐसे युग में महर्षि दयानन्द का जन्म फाल्गुन बदी दशमी संवत् 1881 को, (12 फरवरी 1824) को हुआ था । उनका निधन 30 अक्टूबर 1883 को दीपावली के दिन कार्तिक मास की अमावस्या संवत् 1940 को हुआ ।

दयानन्द का जन्म उस युग में हुआ, जब भारतीय लोग पश्चिम की विद्या बुद्धि, विज्ञान एवं तर्क युक्त चिन्तन के सम्पर्क में आकर यह नहीं समझ पा रहे थे कि इस नवचेतना को किस रूप में स्वीकार करें । पुनरुत्थान के अन्य ज्योतिर्धरों ने पश्चिमी शिक्षा, पाश्चात्य चिन्तन और पाश्चात्य विचारधाराओं से प्रेरणा ग्रहण की थी । महर्षि दयानन्द तो ऐसे परिवार में पले-बढ़े थे, जहां पर पाश्चात्य परिवेश का लेशमात्र भी नहीं था । उनके गुरुवर स्वामी विरजानन्द ने पुरातन संस्कृत शास्त्रों की ही शिक्षा दी थी । इस प्रकार भारतीय दर्शन, व्याकरण और योग में दीक्षित होकर भी दयानन्द ने अपने समय में सर्वथा प्रगतिशील और समयोचित, सामाजिक पुनरुत्थान में सक्षम कार्यक्रम प्रस्तुत किया ।

दयानन्द मूलतः धार्मिक पुरुष हैं, परन्तु उनका धर्म पूजा-पाठ अथवा कर्मकाण्ड तक सीमित संकीर्णता के परिधि से बाहर तक व्याप्त है । उन्होंने धर्म को व्यापक धरातल प्रदान किया । उनकी दृष्टि में जो भी पक्षपात रहित,

thearyasamaj.org

न्यायाचरण, सत्यभाषणादियुक्त, ईश्वराज्ञा, वेदों से अविरुद्ध है, वही धर्म है। वे वेदानुकूल आचरण के समर्थक हैं। दयानन्द ने वेद के नित्यत्व और अपौरुषेयत्व से सम्बन्धित विचार व्यक्त किए हैं। उनके वेदार्थ-चिन्तन में अनेक युगान्तकारी विचार एवं धारणाएं प्रतिफलित हुईं। यही वेदार्थ के सम्बन्ध में उनकी क्रान्ति हैं। उन्होंने वेद के अध्ययन को मनुष्य के जीवन तथा कार्य व्यवहार से जोड़ा उन्होंने नारा दिया–"वेदों की ओर लौटो।" उन्होंने वेद की आज्ञा के अनुसार जीवन-यापन करने पर बल दिया। उन्होंने वेद के अध्ययन का अधिकार सभी को दिया। उन्होंने कहा कि स्त्री और शूद्र को भी वेदाध्ययन का अधिकार है। उन्होंने वेदों की मानववादी विचारधारा से परिचित कराया, जहां कहा गया है कि मनुष्यमात्र को मित्र की दृष्टि से देखो।

दयानन्द ने वेद में निहित उच्चतर नैतिक, आध्यात्मिक मूल्यों, दार्शनिक तत्वों एवं सामाजिक हित की दृष्टि से विहित विधानों से मानव जाति को परिचित कराया। महर्षि दयानन्द ने असत्य और अन्यायपूर्ण अधर्म का तीव्र खण्डन करने में संकोच नहीं किया। उन्होंने 'सत्यार्थप्रकाश' की भूमिका में तथा अनुभूमिकाओं में स्पष्ट कर दिया कि–"उनका मुख्य प्रयोजन सत्य अर्थ का प्रकाश करना है, अर्थात् जो-जो सब मतों में सत्य बातें हैं वे सब अविरुद्ध होने से उनका स्वीकार करके और जो-जो मत-मतान्तरों में मिथ्या बातें हैं, उनका खण्डन किया है।"

दयानन्द की दृष्टि से सत्य एक और धर्म एक है। रामधारीसिंह दिनकर ने इसी विशेषता के कारण उन्हें 'संन्यासी योद्धा' कहा था। महर्षि दयानन्द ने दूसरी क्रान्ति सामाजिक क्षेत्र में की। महर्षि दयानन्द ने देखा था कि भारतीय समाज में जातिगत विषमता व्याप्त है, निम्न जातियों पर अत्याचार हो रहा है, नारियों का शोषण किया जा रहा है, उन्हें वेद के अध्ययन से वंचित रखा जा रहा है। दयानन्द ने यजुर्वेद के मन्त्र–'यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः' के अधार पर कहा कि वेद के पठन-पाठन का अधिकार सभी को है। यहां कोई छोटा बड़ा नहीं है। यहां सभी समान हैं। जाति, मत, सम्प्रदाय, भाषा क्षेत्र, लिंग आदि के आधार पर विषमता सामाजिक एकता के लिए अभिशाप है। उन्होंने अछूतों तथा दलितों को समानता का अधिकार दिलाने का मंगल प्रयास किया।

दयानन्द की तीसरी क्रान्ति राष्ट्रीयता के क्षेत्र में है। स्वराज्य की अवधारणा देने वाले वे पहले महापुरुष थे। उन्होंने भारतीयों की सोई हुई अस्मिता को जगाया–"कोई कितना भी करे जो स्वदेशी राज्य होता है, वही सर्वोपरि उत्तम होता है।" महर्षि दयानन्द के राजनैतिक विचार पूर्णतः मौलिक हैं। सत्यार्थप्रकाश में अभिव्यक्त उनके विचार राष्ट्रीयता से ऊपर उठकर भूमण्डलीकरण तथा अन्तर्राष्ट्रीयता का पाठ पढ़ाते हैं। 'यत्र विश्वं भवति

thearyasamaj.org

एकनीडम्' तथा 'वसुधैव कुटुम्बकम्' उनके आदर्श हैं । उन्होंने वेद के आधार पर 'सत्यं बृहदृतम् उग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथ्वीं धारयन्ति' की बात कही । सत्य, झूठ, उग्रता, दीक्षा, तप, यज्ञ और ब्रह्म राष्ट्र के धारक तत्व हैं।

दयानन्द की चौथी क्रान्ति आर्थिक क्षेत्र में है । उन्होंने इस तथ्य को जान लिया था कि भारत कृषि-प्रधान देश है । धन-धान्य के बाहुल्य से ही देश आगे बढ़ सकता है । उन्होंने किसान को राजाओं का राजा कहा था । उन्होंने 'गोकरुणानिधि' के माध्यम से अपनी आर्थिक योजना प्रस्तुत की थी । महर्षि दयानन्द ने धार्मिक, अध्यात्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक तथा आर्थिक इन सभी क्षेत्रों में क्रान्तिकारी कार्यक्रम दिये । उन्होंने सामाजिक समानता के लिए एक ऐसी शिक्षा प्रणाली दी जो सभी को एकता के सूत्र में बांध सकती है । उनका ध्येय था-'संसार का उपकार करना आर्यसमाज का प्रमुख उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना ।'

ऋषि दयानन्द महिमा

शिव करण दुबे "वेदराही")

हे नवोत्थान के अग्रदूत, वैदिक संस्कृति के निर्माता ।
हे राष्ट्र चेतना की बयार, हे नवभारत के निर्माता ।।
दे स्वतंत्रता का मूल मंत्र, कर नवजीवन का शंखनाद ।
थे मातृभूमि के तुम चंदन, वेदों के अनुपम व्याख्याता ।।
सांस्कृतिक क्रांति के तुम निनाद, स्वर्णिम अतीत के मूर्तरूप ।
तुममें था सतयुग झांक रहा, हे आर्यों के जीवनदाता ।।
हे मानव संस्कृति संपोषक, हे सत्यअर्थ के शुभप्रकाश ।
अज्ञान अविद्या के नाशक, हे आत्म-जागरण के दाता ।।
विकृत समाज के संशोधक, हे सत्यसिंधु अभिनव प्रयोग ।
क्रांति के भीषण दावानल, हे वेद-धर्म के विज्ञाता ।।
जीवन भर तुमने गरल पिया, थे नीलकंठ सम तुम दानी ।
हे दयासिंधु । ऋषि दयानन्द, हे भक्ति के अमृत दाता ।।
शतवार नमन तुमको ऋषिवर बलिदान तुम्हारा है अनुपम ।
तुम सा सपूत फिर से आए, अकुलाती है भारतमाता ।।

क्वार्टर नं० 5-बी-493, पो--शक्तिनगर
(सोनभद्र) उ.प्र.

thearyasamaj.org

ऋषिनिर्वाणदिवस पर विशेष–

इसी सन्धि-बेला में बाल ब्रह्मचारी ने अभयदान दिया था

–स्वामी श्रद्धानन्द

मृत्यु शय्या पर बाल ब्रह्मचारी लेटा हुआ है । वह पितृ ऋण से मुक्त है, क्योंकि वहां एक, दो से लेकर दस सन्तान तक की गणना नहीं, सारा संसार ही उसकी सन्तान है । जिनकी शुद्धि के लिए उसने संसार के सार्वभौतिक सुख छोड़े थे उन्होंने उसकी मौत की ठान ली थी । विष के कारण सारा शरीर छालों से भरा हुआ था । कष्ट असह्य है परन्तु सारा कष्ट प्रश्वास के साथ बाहर निकला जा रहा था । पीर जी हकीम हैरान, डॉक्टर न्यूटन विस्मित रह गए । अनायास डॉक्टर न्यूटन के मुख से ये शब्द निकले, "कैसा दृढ़ वीर, सहनशील आत्मा है । कैसे असह्य रोग से पीड़ित है परन्तु दुख नहीं मानता । यही एक व्यक्ति है जो इतनी बड़ी बीमारी पर भी संभला हुआ है और अभी तक जीता है ।"

दु:ख पर ऐसी विजय डॉक्टरों ने भी नहीं देखी थी । इतिहास में ऐसे कोई बिरले ही दृष्टान्त दिखा सकता है । उस समय अन्धकार और प्रकाश का युद्ध हो रहा था । अन्त को प्रकाश का जय-जयकार हो गया । जिन आत्माओं ने आचार्य के उपदेश तथा जीवन से शान्ति लाभ की थी वे सब घबराई हुई थीं । उन्हें बुलाकर पीठ के पीछे खड़े होने की आज्ञा मिली । फिर चारों ओर से किवाड़ खुलवा दिए गए । छत का भी कोई मार्ग बन्द न रहा । इस प्रकार खुले मैदान में अपने स्वामी प्रभु से बातें आरम्भ कीं । अन्त में इतने ही शब्द मुख से निकले, "हे दयामय, हे सर्वशक्तिमान ईश्वर ! तेरी यही इच्छा है ! तेरी यही इच्छा है, तेरी यही इच्छा है ! तेरी इच्छा पूर्ण हो !!!" करवट बदली और प्रश्वास के साथ प्राण भौतिक शरीर से बाहर निकल गए । इसीलिए आर्यसमाज के आदिकवि 'अमीचन्द्र' ने गाया था :

परिव्राजकाचार्य स्वामी दयानन्द
पधारा है परलोक डंके बजाता ॥

वह कौन सी बेला थी जब बाल ब्रह्मचारी दयानन्द, निर्भय होकर सूर्यलोक पर पैर जमा, अमरलोक का पथगामी हुआ ? कार्तिक की अमावस, कृष्ण पक्ष का अस्त और शुक्ल पक्ष का उदय था । अन्धकार पर प्रकाश की

thearyasamaj.org

विजयारात्रि थी। उस सन्धिबेला में प्राण त्यागकर ऋषि ने अन्धकार से आवृत संसार को क्या उपदेश दिया। उनका उपदेश ध्यानपूर्वक सुनो :

"हे मर्तलोक के निवासियों ! तुम प्रकाश स्वरूप पिता को भूलकर संशयात्मक हो, पग-पग पर ठोकर खा रहे हो। अन्धकार ने तुम्हें तुम्हारा स्वरूप भुला दिया है। वेद का नाद सुनो :

श्रृण्वन्ति विश्वेअमृतस्यपुत्राः ।
आये धामानि दिव्यानि तस्थुः ॥

तुम स्वतन्त्र हो, तुमने अपने को परतन्त्र समझ लिया है। तुम प्रकाश स्वरूप के सखा हो। तुमने अपने को अन्धकार का दास समझ लिया है। तुम आत्मा हो तुमने अपने आपको जड़ समझ रखा है। संसार के बन्द किवाड़ों ने तुम्हें भ्रमा रखा है। वे कपाट तुम्हारे और प्रभु के अन्दर पर्दा डाल रहे हैं। खोल दो, सारे हृदय के कपाट, फाड़ डालो इस मायावी पर्दे को और देखो कि तुम्हारा रूप कैसा दिव्य है। उस दिव्य रूप के दर्शन करने के पीछे तुम निर्भय हो जाओगे। बन्धन तोड़ो तब निर्वाण मिलेगा।"

परन्तु तुम निर्भय कब हो सकते हो। जब तक शरीर के दास हो, जब तक विषय तुम्हारी इन्द्रियों को अपने अन्दर खींच सकते हैं, जब तक काम का वेग तुम्हें डांवाडोल करके गिरा सकता है, तब तक निर्भय अवस्था प्राप्त नहीं हो सकती। ब्रह्मचर्य के तेज से ही उत्तेजित होकर मृत्यु को जीत सकते हैं। युग का विधाता (दयानन्द) हम सबको यही उपदेश अपने जीवन से दे गया है।

[श्रद्धा, 19 नवम्बर, 1920 से साभार]

आर्य साहित्यसेवी विश्वकोश

दस खण्डों में प्रस्तावित आर्य साहित्यसेवी विश्वकोश में पाँच हजार दिवंगत/वर्तमान आर्य साहित्यसेवियों का जीवन-वृत्त/साहित्य-परिचय प्रकाशित करने की योजना है। यदि आपने अथवा आपके परिजनों/परिचितों ने आर्यसमाज के मन्तव्यों के प्रचार-प्रसार के लिए किसी भी भाषा में अथवा किसी भी विधा में लेखन-कार्य किया है, तो निःशुल्क परिचय-प्रकाशन के लिए निर्धारित प्रपत्र के अनुसार विस्तृत परिचय, चित्र तथा प्रकाशित साहित्य भेजें।

thearyasamaj.org

दयानन्द के अनुयायी कहां हैं-कहां हैं ?

—वेदप्रकाश गुप्ता

निजाम को घुटनों के बल झुका दिया जिन्होंने,
सत्य के प्रकाश को बचा लिया जिन्होंने,
विधवाओं को सुहाग लौटा दिया जिन्होंने,
सतियों को सत्य का पथ दिखा दिया जिन्होंने,
मातृशक्ति को क-ख पढ़ा दिये जिन्होंने,
वे दयानन्द के सिपाही कहां हैं, कहां हैं ?

कट्टर पंथियों का शोषण मिटा दिया जिन्होंने,
ब्राह्मणों को ब्रह्ममार्ग दिखा दिया जिन्होंने,
जन-जन में राष्ट्रभाव जगा दिया जिन्होंने,
शुद्धि से भेदभाव मिटा दिया जिन्होंने
सत्य क्या है तर्क से समझा दिया जिन्होंने
वे दयानन्द के सिपाही कहां हैं, कहां हैं ?

इस देश का दीपक फिर टिमटिमाने लगा है,
अलगाववाद का तूफान इसे बुझाने लगा है,
कुचक्र कुर्सियों का देश मिटाने लगा है,
विदेशी पूंजीवेश इसे डगमगाने लगा है,
घूस का कैन्सर चमन को जलाने लगा है ।
वे दयानन्द के सिपाही कहां हैं, कहां हैं ?

अब बनो हवन की आग-शान्तिमय क्रान्ति करनी है,
असुरों का शोणित पीने की क्रान्ति करनी है,
आर्यों का है आर्यव्रत-दूर यह भ्रान्ति करनी है,
मां मांग रही बलिदान-खूं से वेदी रंगनी है,
कृण्वन्तु विश्वं आर्यम् की अब तो पूनी कतनी है ।
वे दयानन्द के सिपाही कहां हैं, कहां हैं ?

अध्यक्ष, मानव कल्याण केन्द्र,
देहरादून

thearyasamaj.org

विजय दशमी पर विशेष-

रामराज्य का स्मरण क्यों ?

–स्व० पं० विश्वम्भर सहाय 'प्रेमी'

विजयदशमी के पुनीत अवसर पर करोड़ों नर नारी श्रीरामचन्द्र का स्मरण करते हैं और उनके प्रति अपनी श्रद्धा और भक्ति प्रगट करते हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि राम ने रावण जैसे महा शक्तिशाली राजा पर विजय प्राप्त की थी। अतः दशहरे के पर्व को राम विजयोत्सव भी कहा गया है। श्रीराम के राज्य सिंहासन पर आसीन होने पर ऐसा समझा जाता है कि अयोध्या राज्य में सर्वत्र समृद्धि फैल गई। प्रजा अत्यन्त प्रसन्न थी और राज्य भर में पुण्य का साम्राज्य था।

महाकवि तुलसीदास ने मानस के उत्तरकाण्ड में रामराज्य का वर्णन करते हुए लिखा है–

दैहिक दैविक भौतिक तापा।
रामराज नहिं काहुहि व्यापा॥
सब नर करहिं परस्पर प्रीति।
चलहि स्वधर्म निरत श्रुति नीति॥

राम का राज्य हो जाने पर दैहिक, दैविक और भौतिक संकट किसी को भी पीड़ित नहीं करता। सब मनुष्य आपस में प्रेम करते हैं और वेदों में वर्णित नीति को स्वीकार करते हुए अपने अपने धर्म का पालन करते हैं।

आगे कहा गया है कि सत्य के चार चरण-सत्य, पवित्रता, दया और दान राज्य भर में जनता के आचरण में आ गये हैं। उनके पालन करने से पाप कहीं भी विद्यमान नहीं रहा है। अल्प आयु में किसी की भी मृत्यु नहीं होती। सभी स्वस्थ हैं।

नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना।
नहिं कोउ अबुध न लच्छन हीना॥

राज्य भर में न तो कोई दरिद्र है और न दुखी व दीन है। आगे कहा गया है कि राज्य में सभी व्यक्ति चतुर और गुणवान हैं। उनमें किसी प्रकार का दम्भ नहीं। राज्य में कोई व्यक्ति किसी के साथ कपट और चतुराई का व्यवहार नहीं करता।

सब उदार सब पर उपकारी।
विप्र चरण सेवक नर नारी॥

thearyasamaj.org

राज्य में रहने वाले सभी एक दूसरे के साथ उदारता बरतते हैं । सभी परोपकारी हैं । राज्य के नर और नारी ब्राह्मणों के चरण सेवक हैं ।

तुलसीदास ने रामराज्य में प्रकृति का वर्णन करते हुये लिखा है–

फूलहिं फरहिं सदा तरु कानन ।
रहहिं एक संग गज पंचानन ॥
सीतल सुरभि पवन बह मंदा ।
गुंजत अलि लै चलि मकरंदा ॥
लता विटप मागें मधु चवहीं ।
मनभावतो धेनु पय स्त्रवहीं ॥

वन में वृक्ष सदा फूलते फलते हैं । हाथी और सिंह शत्रुता को भूलकर एक दूसरे के साथ रहते हैं । शीतल, मंद और सुगन्धित वायु चलती रहती है । भ्रमर कलियों का मकरन्द पीकर गुंजार करते हैं । वृक्ष और बेल मांगने पर रस प्रदान करते हैं । और राम के राज्य की गायें मन चाहा शुद्ध दूध प्रदान कर देती हैं ।

नदियों के जल का वर्णन करते हुए महाकवि तुलसीदास लिखते हैं कि सरिताओं में शीतल और निर्मल जल बहता है । वे प्रजा को सुखी करने वाली हैं । समुद्र अपनी मर्यादा में रहता है और लहरों के द्वारा तट पर रत्नों को बखेरता रहता है ।

महाकवि तुलसीदास ने अयोध्या नगरी और राम के रहन सहन का भी विस्तार के साथ वर्णन किया है । उन्होंने राज्य शासन चलाने में श्रीराम द्वारा गुरु वशिष्ठ को समुचित आदर देने का भी उल्लेख किया है ।

यद्यपि राम राज्य को कई युग बीत गये परन्तु राम की स्थिति आज भी जनता को नवचेतना दे रही है । इस युग के महापुरुष महात्मा गांधी जी ने राम-राज्य को बार-बार स्मरण किया था । गांधी जी अपने देश में रामराज्य चाहते थे । उनके पदचिन्हों पर चलने वालों ने भी अनेक बार राम राज्य का स्मरण किया है । परन्तु आज देखना यह है कि क्या रामराज्य का स्वप्न सत्य सिद्ध हो रहा है या हम उसके विपरीत चल रहे हैं । ●

(प्रेमी स्मृति ग्रन्थ से साभार)

ब्रह्मा सुमेधाः सो अस्मिन् मदेत ।

जो ब्रह्म ज्ञानी है मेधावी है वह इस प्रभु में मग्न होकर हर्षित हो सकता है ।

thearyasamaj.org

गांधी जयन्ती पर विशेष–

क्या हम गांधी के रास्ते पर चल रहे हैं ?

–स्व० पं० विश्वम्भर सहाय 'प्रेमी'

प्रायः कहा जाता है कि हम राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के मार्ग का अनुसरण कर रहे हैं । किसी भी विशेष अवसर पर जब गांधी जी का स्मरण होता है तब राजपुरुष यही कहते हैं-हम गांधी जी से प्रेरणा लेकर अपने देश का सर्वोन्मुखी विकास करना चाहते हैं । अभी दो सप्ताह पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमति इन्दिरा गांधी ने कहा था कि हम महात्मा गांधी जी के रास्ते पर चल रहे हैं । हम उनके बताये रास्ते पर चल कर अपने देश को एक मजबूत राष्ट्र बनाने का यत्न कर रहे हैं ।

भारत में समय समय पर विदेशों से जो राजपुरुष, विशिष्ट व्यक्ति और राजदूत आदि आते हैं और वे गांधी जी की समाधि पर पुष्प चढ़ाने के लिए जाते हैं तब भी हमारे राजपुरुष गांधी जी का स्मरण करते हुए यही कहते हैं कि हमारा देश गांधी जी के मार्ग पर चल रहा है ।

परन्तु हमें देखना यह है कि क्या हम सचमुच गांधी जी के रास्ते पर चल रहे हैं या उस रास्ते से भटक गये हैं । गांधी जी के पवित्र नाम का सहारा लेकर जिस समय भारत ने स्वतंत्र होकर अपने देश के निर्माण कार्य का भार सम्भाला उस समय की विचारधारा और आज की विचारधारा में किसी प्रकार का सामंजस्य नहीं दिखाई दे रहा । यह ठीक है, देश की परिस्थितियां समय के अनुसार बदलती रहती हैं, परन्तु परिस्थितियों के साथ ध्येय और उद्देश्य में अन्तर नहीं आना चाहिये । आज राष्ट्र को समुन्नत करने का जो ध्येय सरकार ने बना लिया है वह मेरे विचार से गांधी जी के रास्ते के सर्वथा विपरीत है। आज राष्ट्र की बढ़ती हुई समस्याओं में नित्य नई नई और समस्याओं का जुड़ जाना इस बात को प्रकट करता है कि हमने गांधी जी के सादा जीवन और जीवन की पवित्रता के सिद्धान्तों को भूला दिया है । स्वतंत्रता के पश्चात् राष्ट्र के जीवन में जो अनेक परिवर्तन आये हैं उनमें से कुछ की मैं यहां चर्चा कर देना आवश्यक समझता हूं । उन्हें सामने रखकर प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं विचारना है कि क्या हम सचमुच गांधी जी के मार्ग पर चल रहे हैं ।

देश में शराब का जोर

स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत किसी को यह आशा नहीं थी कि यह दिन भी आयेगा जब सरकार करोड़ों रुपये की आय बढ़ाने के लिये खुले रूप में लोगों को शराब पीने के लिये सुभीता देगी । महात्मा गांधी जी के आन्दोलनों में शराब की दुकानों पर तो पिकेटिंग किया जाता था । पिकेटिंग करते हुए हजारों भाई-बहन जेल तक गये । स्वराज्य मिलने के पश्चात् शराब का प्रयोग

thearyasamaj.org

बढ़ता चला गया । अब स्थिति यह है कि प्रत्येक राज्य सरकार शराब की आय बढ़ाने के लिए शराब की ठेके की दुकानों में बराबर वृद्धि कर रही है। जिन राज्यों में मद्य निषेध लागू था वहां भी अब शराब के इस्तेमाल में छूट दे दी गई है ।

प्रशासन के बढ़ते खर्च

स्वराज्य मिलने पर महात्मा गांधी ने जोर दिया था कि भारत के राष्ट्रपति शानशौकत से न रह कर साधारण मकान में रहें । उन्होंने यह भी सलाह दी थी कि प्रशासन को चलाने वाले मंत्री कम से कम खर्च करें । उन्होंने कहा था कि सादगी से रहकर वे जनता की मुसीबतों को दूर करने का यत्न करें । वे चाहते थे कि छोटी से छोटी झौंपड़ी तक स्वराज्य का प्रकाश पहुंचे । परन्तु आज स्थिति उनके इन विचारों से जरा भी मेल नहीं खा रही । केन्द्रीय और राज्य सरकारों के मंत्रियों के रहन सहन का स्तर बिल्कुल बदल गया है । उनके रहन सहन के ठाठ तो आज पुराने राजा महाराजाओं से भी बढ़ गये हैं । आश्चर्य की बात तो यह है कि जब उनके इस प्रकार के शाही रहन सहन की आलोचना की गई तो भारत की प्रधान मंत्री इन्दिरा गांधी ने उनका बचाव करते हुए कहा कि उनके रहन सहन से अधिक शानदार रहन सहन तो भारत के अनेकों पूंजीपतियों का है । मेरे विचार से इस प्रकार के बचाव से मंत्रियों के रहन सहन में सादगी की भावना नहीं आ सकती । मंत्रियों की कोठियों और बंगलों की सजावट के लिए विदेशी सामान का प्रयोग किया जाना गांधी जी के रास्ते के सर्वथा विपरीत है ।

विदेशी सामान का प्रयोग

आयात निर्यात की वर्तमान नीति इस प्रकार की बन गई है कि जिसने भारत की गरीब जनता की अर्थव्यवस्था को और खराब कर दिया है । भारत सरकार के आयात सामान की सूची का अध्ययन करने से पता चलता है कि विदेशों से करोड़ों रुपये की सौन्दर्य प्रसाधन की वस्तुएं मंगाई गईं जो इस बात को प्रगट करता है कि स्वदेशी की भावना समाप्त हो चुकी है ।

एक तरफ तो हम अपने देश की विकास के लिये अरबों रुपये का ऋण विदेशों से ले रहे हैं और दूसरी तरफ पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव में बहकर विदेशों से करोड़ों रुपये का फैशन का सामान मंगा रहे हैं । मेरी दृष्टि से यह सब गांधी जी की विचारधारा के विपरीत ही हो रहा है ।

भ्रष्टाचार का जोर

गांधी जी ने ईमानदारी पर सबसे अधिक जोर दिया और चाहते थे कि प्रत्येक व्यक्ति ईमानदारी के साथ अपना जीवन यापन करे । वे चाहते थे कि सम्पत्ति कुछ व्यक्तियों तक सीमित न रहकर गरीब मजदूर किसान सबके पास

thearyasamaj.org

पहुंचे। परन्तु आज स्थिति इसके सर्वथा विपरीत है। भ्रष्टाचार के मामलों में सरकार को चलाने वाले अनेक मंत्री लिप्त हैं। अफसरों का भ्रष्टाचार तो बहुत ही जड़ पकड़ गया है। छोटे से छोटे कर्मचारी से लेकर बड़े से बड़े अफसर तक रिश्वत लेने में संकोच नहीं करते। इसका परिणाम यह है कि सारे राष्ट्र में भ्रष्टाचार इतना व्याप्त हो चुका है कि अब उससे पीछा छुड़ाना मुश्किल हो रहा है।

गरीब को राहत नहीं

इतने वर्ष बीत जाने पर भी आज गरीब को राहत नहीं। गांधी जी चाहते थे कि भारत के गरीब से गरीब व्यक्ति को रोटी कपड़ा मिले। इसके बच्चों की शिक्षा का प्रबन्ध हो और वह यह महसूस करे कि उसके घर में आजादी का दीपक जल रहा है, परन्तु आज वस्तुस्थिति इसके विपरीत है। गरीब बढ़ती हुई मंहगाई के कारण सुख के साथ जीवन नहीं बिता सकता। लाखों मजदूर यदि ग्रामों में कृषि और छोटे उद्योग धन्धों में अपनी शक्ति लगाते तो उसका उन्हें और देश को और अधिक लाभ पहुंच सकता था। गांधी जी ने ग्रामों को आत्मनिर्भर बनाने पर जो जोर दिया था, उस में भी सफलता मिलती।

निष्ठा के साथ काम नहीं

गांधी जी कहते थे कि प्रत्येक व्यक्ति पूरी निष्ठा के साथ अपना काम करे। उसकी नीयत परिश्रम करके रोटी खाने की हो। परन्तु अब स्थिति इसके विपरीत नजर आ रही है। कार्यालयों में काम करने वाले पूरे समय काम करने को तैयार नहीं। मजदूर वर्ग कल कारखानों के काम को मन लगाकर पूरा करने को तैयार नहीं। सारे देश में अधिकारों की मांग का जोर है। कर्तव्य पालन और निष्ठा के साथ काम करने को कोई तैयार नहीं। क्या यह गांधी जी के सिद्धान्तों के अनुकूल है?

सबसे बड़ी भूल इस सम्बन्ध में यह हुई है कि प्रशासन को चलाने वाले मंत्रियों ने ही अपने उत्तरदायित्व का ठीक तरह से पालन नहीं किया। उन्होंने अपने साथियों को अनुचित रूप से लाभ पहुंचाने की जो नीति अपनाई, उसका भी अफसरों पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा और सरकारी काम काज में स्थिरता नहीं रह पाई।

ये सब ऐसी समस्याएं हैं कि जिनका हमारे नेताओं और शासकों को सुलझाने का यत्न करना है। गरीब के मकान और झोंपड़ी में खुशहाली लाने के लिए हमें गम्भीरता पूर्वक गांधी जी के रास्ते को ही अपनाना होगा। देश की अर्थव्यवस्था में तभी सुधार हो सकेगा, जब शासक अपने आपको एक गरीब देश का सेवक समझें। केवल कागजों पर अंकित शब्द–"गरीबी दूर करो" देश की गरीबी की समस्या को कभी हल न कर सकेंगे। ●

(पंचायती राज, 30 सितम्बर, 1973 से साभार)

thearyasamaj.org

गतांक से आगे–

चाणक्यसूत्राणि

अपरधनानि निक्षप्तुः केवलं स्वार्थम् ॥१५४॥

दूसरे का धन धरोहर के रूप में रखने वाले का स्वार्थ ही स्वार्थ रहता है और कुछ नहीं ॥१५४॥

दानं धर्मः ॥१५५॥

दान ही सबसे बड़ा धर्म है ॥१५५॥

नार्थागतोऽर्थवद्विपरीतोऽनर्थभावः ॥१५६॥

वणिग्वृत्ति को ध्यान में रखकर किया गया दान सफल नहीं होता । यदि दान दिया ही नहीं जाता तो वह और भी बड़ा अनर्थ होता है ॥१५६॥

यो धर्मार्थौ न विवर्धयति स कामः ॥१५७॥

जो धर्म तथा अर्थ की वृद्धि नहीं करता, वह काम (इच्छा) कहलाता है ॥१५७॥

तद्विपरीतोऽनर्थसेवी ॥१५८॥

जो मनुष्य धर्म तथा अर्थ को नष्ट करने वाले काम का सेवन करता है, वह अनर्थ की उपासना करता है ॥१५८॥

ऋजुस्वभावपरो जनेषु दुर्लभः ॥१५९॥

कोमल स्वभाव सम्पन्न व्यक्ति विरले ही होते हैं ॥१५९॥

अवमानेनागतमैश्वर्यमवमन्यते साधुः ॥१६०॥

मनस्वी पुरुष अपमानपूर्वक मिलने वाले ऐश्वर्य को ठोकर मार देते हैं ॥१६०॥

बहूनपि गुणानेकदोषो ग्रसति ॥१६१॥

मानव के बहुतेरे गुणों को केवल एक दोष नष्ट कर देता है ॥१६१॥

कदाचिदपि चारित्रं न लंघयेत् ॥१६२॥

सज्जन पुरुष सदाचार का उल्लंघन कदापि न करे ॥१६२॥

महात्मना परेण साहसं न कर्त्तव्यम् ॥१६३॥

समझदार मनुष्य को चाहिए कि शत्रु के साथ खेलवाड़ न करे ॥१६३॥

क्षुधार्तो न तृणं चरति सिंहः ॥१६४॥

भूखा होता हुआ भी सिंह घास नहीं खाता ॥१६४॥

प्राणदपि प्रत्ययो रक्षितव्यः ॥१६५॥

प्राण दे करके भी जनसाधारण में अपनी साख (विश्वास) की रक्षा करे ॥१६५॥

thearyasamaj.org

पिशनः श्रोता पुत्रदारैरपित्यज्यते ॥१६६॥

चुगली करने तथा सुनने वाले को स्त्री-पुत्र भी त्याग देते हैं ॥१६६॥

बालादप्यर्थजातं श्रृणुयात् ॥१६७॥

बालक भी यदि मतलब की बात कहता हो तो उसे मान लेना चाहिए ॥१६७॥

सत्यमप्यश्रद्धेयं न वदेत् ॥१६८॥

अविश्वसनीय सत्य बात भी न कहनी चाहिए ॥१६८॥

नाल्पदोषाद् बहुगुणास्त्यज्यन्ते ॥१६९॥

थोड़े से दोष के कारण अधिक गुणी मनुष्य को न त्यागे ॥१६९॥

विपश्चित्स्वपि सुलभा दोषाः ॥१७०॥

विद्वान् मनुष्यों में भी दोष सुलभ रहते हैं ॥१७०॥

नास्ति रत्नमखण्डितम् ॥१७१॥

रत्न में भी तो छिद्र होता ही है ॥१७१॥

मर्यादातीतं न कदाचिदपि विश्वसेत् ॥१७२

मर्यादा से अधिक किसी पर भी विश्वास न करे ॥१७२॥

अप्रिये कृतं प्रियमपि द्वेष्यं भवति ॥१७३॥

अप्रिय मनुष्य के प्रति किया गया प्रिय कार्य भी द्वेष का कारण बन जाता है ॥१७३॥

नमन्त्यपि तुलाकोटिः कूपोदकक्षयं करोति ॥१७४॥

झुकती हुई भी ढेकुल की बल्ली कुएं का पानी उलीच दती है ॥१७४॥

सतां मतं रनातिक्रमेत् ॥१७५॥

विद्वानों के विचार का अनादर न करे ॥१७५॥

गुणवदाश्रयान्निर्गुणोऽपि गुणी भवति ॥१७६॥

गुणवान् की संगति से निर्गुण भी गुणी बन जाता है ॥१७६॥

क्षीराश्रितं जलं क्षीरमेव भवति ॥१७७॥

दूध में डाला गया पानी भी दूध बन जाता है ॥१७७॥

मृत्पिण्डोऽपि पाटलिगन्धमुत्पादयति ॥१७८॥

मृत्तिकापिण्ड भी संगति के प्रभाव से पाटलि (पांढर) पुरुष की सुगन्धि पा लेता है ॥१७८॥

रजतं कनकसङ्गात्कनकं भवति ॥१७९॥

चांदी भी सोने का संग पाकर सोना हो जाती है ॥१७९॥

(क्रमशः)

प्रकाशक-मुद्रक-स्वामी-मूलचन्द गुप्त द्वारा सम्पादित, तथा वैदिक प्रेस, 995/51, गली नं०17, कैलाशनगर, दिल्ली-31 (फोन-22081646) से मुद्रित कराकर, ओम् प्रतिष्ठान, कुसुमालय, बी-1/27, रघुनगर, पंखा रोड, नई दिल्ली- 45, से प्रकाशित किया । न्यायक्षेत्र-दिल्ली ।